17 मार्च 2014, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे जी-जागरण पर प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 36, अंक : 24 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

मार्च (द्वितीय), 2014 (वीर नि. संवत्-2540) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में -

ताजा हुई पंचकल्याणक की मधुर स्मृतियाँ

द्वितीय वार्षिकोत्सव उल्लास के साथ सम्पन्न

जयपुर (राज.) : 2 वर्ष पूर्व दिनांक 21 फरवरी से 27 फरवरी 2012 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में संपन्न ऐतिहासिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की स्मृति में आयोजित 3 दिवसीय द्वितीय वार्षिकोत्सव दिनांक 28 फरवरी से 2 मार्च तक ऐसी अनुभूतियों के साथ संपन्न हुआ मानो साक्षात् पंचकल्याणक ही सम्पन्न हो रहा हो।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की रीति-नीति के अनुरूप ही उक्त समस्त आयोजनों में ज्ञानवर्धक आध्यात्मिक कार्यक्रमों की ही प्रमुखता रही।

समारोह की मुख्य बातें -

- **शिलान्यास सम्पन्न**
- **सी.डी. के माध्यम से पू. गुरुदेवश्री के प्रवचन**
- **समयसार परिशिष्ट पर डॉ. भारिल्ल के लाइव प्रवचन**
- **जी जागरण टी.वी. पर - डॉ. भारिल्ल के प्रवचन**
- **पू. गुरुदेवश्री के व्यक्तित्व कर्तृत्व पर विद्वत्गोष्ठियाँ**
- **पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, डॉ.संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन आदि समागत विद्वानों के प्रवचन**
- **जन्मकल्याणक राजसभा का आयोजन**
- **स्नातक ज्ञानगोष्ठी सम्पन्न**
- **रत्नत्रय विधान का आयोजन**
- **रथयात्रा**
- **महामस्तकाभिषेक**

डॉ. भारिल्ल के प्रवचन आकर्षण के विशिष्ट केन्द्र

एक लम्बी व गम्भीर अस्वस्थता के बाद इस वार्षिकोत्सव में डॉ. भारिल्ल के समयसार के परिशिष्ट पर प्रवचन आकर्षण के विशिष्ट केन्द्र रहे।

दिनांक 2 मार्च को श्रोताजनों के विशिष्ट आग्रह पर 'करोड़पति रिक्शावाला' वाले प्रवचन ने श्रोता समूह को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

डॉ. भारिल्ल ने वार्षिकोत्सव के बाद भी समयसार परिशिष्ट पर अपने प्रवचन जारी रखने का संकल्प व्यक्त किया।

पंचतीर्थ जिनालय के सामने स्थित हॉल का नवीनीकरण प्रस्तावित -

शिलान्यास सम्पन्न -

1 मार्च 2014 - ज्ञानतीर्थ टोडरमल स्मारक भवन में स्थित श्री पंचतीर्थ जिनालय के सामने स्थित हॉल के नवीनीकरण कार्य का शिलान्यास **श्री मनोजजी प्रधान (शीतल ग्रुप) भोपाल** के करकमलों द्वारा सम्पूर्ण विधिविधान के साथ समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ।

शिलान्यास की सम्पूर्ण विधि प्रतिष्ठाचार्य ब्र. अभिनन्दनकुमारजी के निर्देशन में सम्पन्न हुई।

अपने शिलान्यास भाषण में श्री मनोजजी प्रधान ने टोडरमल स्मारक द्वारा किये जा रहे तत्त्वप्रचार की बहुत सराहना की।

उल्लेखनीय है कि उक्त नवीनीकरण के कार्य में श्री मनोजजी प्रधान, उनके

(शेष पृष्ठ 4 पर ...)

पू. गुरुदेवश्री कानजीस्वामी
के व्यक्तित्व कर्तृत्व विषय पर विद्वत्गोष्ठी

पंचकल्याणक की स्मृति–स्वरूप आयोजित द्वितीय वार्षिकोत्सव के अन्तर्गत समयसार के मर्मज्ञ श्रीकानजीस्वामी एवं बीसवीं सदी की आध्यात्मिक क्रान्ति के सूत्रधार– आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी विषयों पर गोष्ठियों का आयोजन किया गया।

(1) दिनांक 28 फरवरी को दोपहर में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के वर्तमान विद्यार्थियों द्वारा **'समयसार के मर्मज्ञ श्रीकानजीस्वामी'** विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी के अध्यक्ष श्री प्रकाशकरणजी सेठिया सरदार शहर, मुख्य अतिथि श्री शान्तिलालजी चौधरी भीलवाड़ा एवं विशिष्ट अतिथि पण्डित शिखरचंदजी विदिशा एवं पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल (प्राचार्य–टोडरमल महाविद्यालय) मंचासीन थे।

इस गोष्ठी में पण्डित मयंकजी ठगन ललितपुर द्वारा **दृष्टि का विषय (पूर्वरंग)**, पण्डित नरेशजी शास्त्री भगवां द्वारा **जिनागम की महत्वपूर्ण गाथा 49 (जीवाजीवाधिकार)**, पण्डित सौरभजी शास्त्री कोलारस द्वारा **कर्तृकर्म मीमांसा (कर्ताकर्म अधिकार)**, पण्डित प्रशान्तजी शास्त्री अमरमऊ द्वारा **पुण्य का हेयोपादेयपना**, पण्डित निलयजी शास्त्री बरायठा द्वारा **ज्ञानी निरास्रव व ज्ञानी के भोग निर्जरा हेतु है**, पण्डित अभयजी शास्त्री सुनवाहा द्वारा **भेद–विज्ञान की महिमा (संवराधिकार)**, पण्डित नियमजी शास्त्री सिलवानी द्वारा **प्रज्ञा ही मोक्ष का कारण है (मोक्षाधिकार)**, पण्डित साकेतजी शास्त्री जयपुर द्वारा **आत्म वैभव (47 शक्तियाँ)** विषय पर अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये।

गोष्ठी का मंगलाचरण पंकजजी शास्त्री, बमनी (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने एवं संचालन सचिनजी शास्त्री सागर व सुमतिनाथजी अम्बेकर (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने किया।

(2) द्वितीय गोष्ठी दिनांक 1 मार्च को दोपहर में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक विद्वानों द्वारा **'बीसवीं सदी की आध्यात्मिक क्रान्ति के सूत्रधार – आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी'** विषय पर आयोजित की गई।

गोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल थे।

इस गोष्ठी में डॉ. सुमतजी शास्त्री बरां द्वारा **जिन अध्यात्म का स्वरूप एवं संक्षिप्त इतिहास**, डॉ. संजयजी शास्त्री दौसा द्वारा **श्री कानजीस्वामी से पूर्ववर्ती सामाजिक स्थिति**, कुमारी परिणति पाटील जयपुर द्वारा **आध्यात्मिक क्रांति में श्रीकानजीस्वामी का योगदान**, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्यरत्न' जयपुर द्वारा **जिन अध्यात्म को श्री कानजीस्वामी की देन–निश्चय–व्यवहार का सुमेल**, पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल मुम्बई द्वारा **श्री कानजीस्वामी आध्यात्मिक चिन्तन का सार–दृष्टि का विषय**, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर द्वारा **वस्तुस्वातंत्र्य के उद्घोषक श्री कानजीस्वामी–(क्रमबद्धपर्याय के संदर्भ में)**, डॉ. श्रीयांसजी सिंघई जयपुर द्वारा **श्री कानजीस्वामी की दृष्टि में कर्तृकर्म मीमांसा (निमित्तोपादान के संदर्भ में)**, डॉ. नीतेशजी शास्त्री डडूका द्वारा **श्री कानजीस्वामी की आध्यात्मिक क्रांति में हमारी भूमिका** विषय पर अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये।

गोष्ठी का मंगलाचरण पण्डित विवेकजी शास्त्री दलपतपुर ने एवं संचालन पण्डित सोनूजी शास्त्री ने किया।

जीवंत हो उठा भव्य जन्मकल्याणक –

1 मार्च 2014 – ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन के विशाल सभागार का वातावरण उससमय वैराग्यरस से ओतप्रोत हो गया जब जन्म कल्याणक की राजसभा के अवसर पर राजा नाभिराय के दरबार में समागत राजाओं के बीच मुनिराजों के स्वरूप, उनके वैराग्य और रत्नत्रय की आराधना की चर्चा चल पड़ी।

पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन के सशक्त निर्देशन में पण्डित विवेकजी शास्त्री दलपतपुर, पण्डित अकलंकजी जैन और पण्डित टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने प्रस्तुतिकरण को प्रभावशाली बना दिया।

राजसभा का उद्घाटन श्रीमती उषा सोगानी एवं श्री राजीवजी सोगानी के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ व मंगलाचरण कुमारी परिणति पाटील जयपुर ने किया।

राजसभा के सभी सदस्यगणों ने मुनिराजों के स्वरूप व उनके रत्नत्रय की आराधना संबंधी तत्त्वचर्चा करके वातावरण को तत्त्वज्ञान व वैराग्यमय बना दिया, जिसकी सभी साधर्मियों ने बहुत प्रशंसा एवं सराहना की।

सभा का संचालन पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन के निर्देशन में पण्डित विवेकजी शास्त्री दलपतपुर, पण्डित अकलंकजी जैन व टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने किया।

राज सभा के आयोजन में महाविद्यालय के छात्रों के साथ–साथ उपस्थित जनसमुदाय ने अत्यंत हर्ष उल्लास के साथ भाग लिया।

धूमधाम से निकली विशाल शोभायात्रा –

कार्यक्रम के अंतिम दिन दिनांक 2 मार्च को जिनेन्द्र भगवान की विशाल शोभायात्रा का भव्य आयोजन किया गया।

टोडरमल स्मारक भवन से प्रारंभ हुई इस विशाल शोभायात्रा में जिनेन्द्र भगवान को रथ में बैठाकर चलने का सौभाग्य श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा ने प्राप्त किया। साथ ही श्री अजितजी तोतुका, वैभव तोतुका ने चंवर को धारण किया। इस शोभायात्रा में जिनेन्द्र भगवान के रथ के

अतिरिक्त महाराजा नाभिराय एवं मरुदेवी अपने राजा-रानी के साथ चल रहे थे। श्री टोडरमल स्मारक, बापूनगर समन्वय, मालवीय नगर सेक्टर-3, आदर्श नगर इत्यादि अनेक महिला मण्डलों की सदस्यायें अपने-अपने मण्डल की ड्रेस में पंचपरमागमों को सिर पर धारण कर गाजती-बाजती शोभायात्रा में उत्साह और भक्ति का अपूर्व वातावरण बना रही थी। महाविद्यालय के सैकड़ों वर्तमान एवं भूतपूर्व स्नातक विद्वान, अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, महिला मंडल, जयपुर महानगर के सभी युवा सदस्यों के साथ-साथ सैकड़ों की संख्या में साधर्मी पुरुष भाई अपने धवल वस्त्रों में केसरिया दुपट्टा डालकर अध्यात्म और भक्ति से सराबोर भजनों पर झूमते हुए चल रहे थे।

शोभायात्रा के मार्ग में पड़ने वाले सभी जैन परिवारों द्वारा श्रीजी के रथ का स्वागत मंगल स्वस्तिक चिह्न बनाकर एवं श्रीजी को अर्घ्य समर्पित कर किया गया।

यह शोभायात्रा श्री टोडरमल स्मारक भवन से राजेन्द्र मार्ग, सावित्री पथ, पार्श्वनाथ चैत्यालय होती हुई लगभग 2.5 कि.मी. का मार्ग तय कर श्री टोडरमल स्मारक भवन पहुँची। शोभायात्रा में श्री सुरेशचंदजी शिवपुरी धर्मध्वजा लेकर सबसे आगे चल रहे थे।

साक्षात श्री अरहंत के ......

दिनांक 2 मार्च 2014 को विशाल शोभायात्रा के उपरांत जब श्री पंचतीर्थ जिनालय एवं श्री सीमंधर जिनालय में विराजमान समस्त जिनबिम्बों का महामस्तकाभिषेक सम्पन्न हुआ तब सभी प्रक्षालकर्त्ता इस तरह भक्तिरस से सरावोर हो उठे मानो **'साक्षात श्री अरिहंत के, मानो न्हवन परसन करें।'**

गरिमामय सानिध्य -

– **शिलान्यासकर्त्ता** – श्री मनोजजी प्रधान (शीतल ग्रुप), भोपाल

– **महोत्सव के आमंत्रणकर्त्ता** – श्री प्रमोदकुमार प्रशांतकुमार जैन परिवार (जलेसर वाले), डी.डी. ग्रुप, दिल्ली

– **ध्वजारोहणकर्त्ता** – श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी परिवार, जयपुर

– **सभागृह का उद्घाटन** – श्री जिनेन्द्रजी जैन (खतौली वाले) दिल्ली

– **कार्यक्रम का उद्घाटन** – श्री दिलीपभाई शाह, मुम्बई

– **कार्यक्रम के अध्यक्ष** – श्री सुशीलकुमारजी गोदीका (अध्यक्ष-पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

– **मंचासीन विद्वत्वर्ग** – डॉ0 हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ0 संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित संजयजी शास्त्री

– **विशिष्ट अतिथिगण** – श्री अभयकरणजी सेठिया सरदारशहर, श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई, श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी जयपुर, श्री शान्तिलालजी जैन अलवर, श्री जिनेन्द्रजी जैन दिल्ली, श्री सनतकुमारजी जैन फिरोजाबाद, श्री आशीषजी जैन मुम्बई, श्रीमती स्वानुभूति जैन मुम्बई

– **विधानआमंत्रणकर्त्ता** – श्री शान्तिलालजी जैन आशीष जैन जयपुर, श्रीमती ज्योत्सना मणिकान्त भाई शाह मुम्बई, कु. नेहा जैन पुत्री श्री सनतकुमार जैन फिरोजाबाद

– **विधि-विधान** – ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर

– **संयोजक** – श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी

– **निर्देशन एवं संचालन** – श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल (कार्यकारी महामंत्री-पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

– **विशिष्ट सहयोग** – पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल

– **क्रियान्वयन** – पण्डित पीयूषजी शास्त्री

दशाब्दि समारोह संपन्न

सिद्धायतन-द्रोणगिरि (म.प्र.) : सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि में स्थित तीर्थधाम सिद्धायतन में संचालित आचार्य समन्तभद्र शिक्षण संस्थान के गौरवमयी 10 वर्ष पूर्ण होने पर दिनांक 21 से 23 फरवरी 2014 तक दशाब्दि समारोह एवं पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की षष्ठम् वर्षगांठ हर्षोल्लासपूर्वक संपन्न हुई।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी द्वारा छहढाला पर सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम, पण्डित रूपचन्दजी बण्डा आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त कार्यक्रम में पण्डित कोमलचंदजी टडा, पण्डित रतनचंदजी शास्त्री कोटा, पण्डित राजेशजी शास्त्री जयपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित शीतलजी शास्त्री नौगांव, पण्डित माधवजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित सौरभजी शास्त्री शाहगढ, डॉ. ममताजी जैन उदयपुर आदि विद्वानों का भी समागम प्राप्त हुआ।

समारोह में रत्नत्रय विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के कार्य पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर द्वारा कराये गये।

कार्यक्रम में उपस्थित 48 स्नातकों द्वारा **'क्रमबद्धपर्याय'** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री ने की। वर्तमान में अध्ययनरत छात्रों द्वारा भी **'सम्यग्दर्शन'** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

दिनांक 22 फरवरी को 'अथ से अब तक' स्मारिका का विमोचन किया गया, जिसमें संस्था को सहयोग करने वाले साधर्मियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए सिद्धायतन की प्रगति का विवरण प्रस्तुत किया गया। इसी अवसर पर ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित 'गुरुदत्त गौरव' व सिद्धायतन के छात्रों द्वारा रचित कविताओं के संकलन का भी विमोचन किया गया।

दिनांक 23 फरवरी को सिद्धायतन में विराजमान जिनबिम्बों का मस्तकाभिषेक किया गया। दशाब्दि समारोह के अध्यक्ष श्री अजितजी जैन बड़ौदा एवं मुख्य अतिथि श्री सुखदयालजी डेवडिया केसली थे। कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. वासन्तीबेन शाह मुम्बई द्वारा किया गया।

समारोह में मुम्बई, दिल्ली, कानपुर, जयपुर, उदयपुर, कोटा, सागर, छतरपुर, बांसवाड़ा, ललितपुर, दलपतपुर, शाहगढ, घुवारा, भगवाँ, मलकापुर, अशोकनगर, मऊरानीपुर आदि स्थानों से अनेक साधर्मियों ने पधारकर धर्मलाभ लिया।

संपूर्ण समारोह पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के निर्देशन में संपन्न हुआ।

– गुलाबचंद जैन, मंत्री

सम्पादकीय –

बहू हो तो ऐसी : ज्योत्स्ना जैसी

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

माँ समताश्री के प्रवचन में आज ज्योत्स्ना की पड़ोसिन अम्मा भी आई और अग्रिम पंक्ति में बैठी, ताकि ध्यान से सुन सके। ज्योत्स्ना ने प्रवचन प्रारंभ होने के पहले ही माँ को उस पड़ौसिन अम्मा की समस्या से अवगत करा दिया था। अत: समताश्री ने क्रमबद्धपर्याय और सर्वज्ञता के द्वारा वस्तुस्वातंत्र्य के सिद्धान्त की सिद्धि से ये आर्त-रौद्र के परिणामों की दिशा स्वयं कैसे बदल जाती है तथा स्व-पर कल्याण कैसे संभव है ? यह विषय सरल भाषा में विस्तार से समझाने का निश्चय किया और बीच-बीच में अम्मा को संबोधते हुए उन्होंने कहा ह्न किसी को भी मानसिक दु:ख न हो, सभी सद्भाव से रहें। कोई किसी को लड़ाये-भिड़ाये नहीं। इसके लिए हमें भगवान की सर्वज्ञता के आधार पर क्रमबद्धपर्याय का स्वरूप समझना होगा। ''देखो अम्माजी ! मैं पहले किसी धर्म विशेष की बात न कहकर सर्वसम्मत बात की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहती हूँ। पहली बात तो यह है कि विश्व में ऐसा कोई धर्म नहीं है, जो किसी न किसी रूप में भगवान को नहीं मानता हो और दूसरी बात यह कि जो भगवान को मानता है, वह उसे सर्वज्ञ भी मानता ही है। तीसरी बात सर्व शक्तिवान भगवान सर्वज्ञ हमारे-तुम्हारे-सबके भविष्य को भी जानते ही हैं। चौथी बात ह्न वह सर्वज्ञ विश्व में जिस द्रव्य में जो होनेवाला है, उसे ही जानेंगे! अनहोनी तो जानेंगे ही नहीं।

इन सब बातों से हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि जब जो होना है, वही होता है तो हम भला-बुरा करने के भाव करके व्यर्थ में पुण्य-पाप के चक्कर में क्यों पड़ें। जो सर्वज्ञ के जाने गये अनुसार होना है, उसमें हमारा क्या स्थान है ? बस हमें इतना जानना भर है। यदि न जानो तो यह भी मत जानो, होने वाले काम को आपके जानने की भी अपेक्षा नहीं है, वह तो अपने स्वकाल में अपनी तत्समय की योग्यता से होगा ही। कहने का तात्पर्य यह है कि यदि आप सर्वज्ञ, सर्वदर्शी एवं पूर्ण वीतरागी भगवान के प्रति आस्थावान हैं, उन्हें अपना आराध्य देव मानते हैं तो आपको अज्ञानजनित पर के कर्तृत्व के भार से आज ही निर्भार हो जाना चाहिए। अन्यथा हम यह समझेंगे कि आप भगवान को ही नहीं मानते।

भगवान की दिव्यध्वनि में आया है कि ह्न 'छह द्रव्यों के समूह का नाम विश्व है, द्रव्य को ही वस्तुत्व गुण के कारण वस्तु कहते हैं। यह सम्पूर्ण द्रव्य या वस्तुयें पूर्ण स्वतंत्र एवं स्वावलंबी हैं, यद्यपि इनके प्रतिसमय होनेवाले परिणमन में अन्य द्रव्यों का निकटतम कारण-कार्य सम्बन्ध है; परन्तु परद्रव्यों के साथ मात्र निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध है, कर्ता-कर्म सम्बन्ध नहीं। अत: हमें-तुम्हें पर में कहीं कुछ भी परिवर्तन नहीं करना है।

ऐसी यथार्थ श्रद्धा से हम निश्चिंत एवं पर के कर्तृत्व के भार से निर्भार हो जाते हैं और हमारा उपयोग सहज में ही दन्द-फन्द से हटकर अन्तर्मुख होने लगता है। इस उपयोग की अंतर्मुख होने की प्रक्रिया को ही ध्यान कहते हैं। धीरे-धीरे उपयोग की अन्तर्मुखता का अर्थात् ध्यान का समय बढ़ता जाता है और एक समय यह आ जाता है कि लगातार अन्तर्मुहूर्त तक उपयोग स्वरूप में स्थिर होने पर केवलज्ञान प्रगट होकर यह आत्मा स्वयं परमात्मा बन जाता है।'

वस्तुव्यवस्था के इस नियम को ही क्रमबद्धपर्याय कहते हैं। इसी क्रमबद्धपर्याय से वस्तुस्वातंत्र्य के सिद्धान्त की सिद्धि हो जाती है। क्रमबद्धपर्याय का मूल आधार सर्वज्ञता है और सर्वज्ञता की स्वीकृति के बिना तो भगवान का अस्तित्व ही नहीं टिकता।

अम्मा ने इस गंभीर और सारभूत प्रवचन को सुना तो बहुत ध्यान से; परन्तु रेगिस्तान की बरसात की भाँति उसकी भावभूमि फिर भी प्यासी रह गई। आज का समय समाप्त हो गया, अत: शेष बात कल पर छोड़नी पड़ी। **(क्रमश:)**

द्रोणगिरि में आध्यात्मिक संगोष्ठी

हार्दिक आमंत्रण

सानिध्य - ब्र. रवीन्द्रकुमारजी 'आत्मन्', अमायन
पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली एवं अन्य अनेक
दिनांक - 27 अप्रैल से 1 मई 2014
संपर्क सूत्र - विनोद देवडिया (अध्यक्ष-9425614226),
डॉ. गुलाबचंद जैन (मंत्री, 9424760859),
पंकज जैन (मैनेजर सिद्धायतन-9753456868)
आयोजक - श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट।

कृपया अपने आगमन की पूर्व सूचना अवश्य दें।

(पृष्ठ 1 का शेष...)
परिवार एवं शीतल समूह द्वारा उल्लेखनीय आर्थिक सहयोग प्रदान किया गया है। इस अवसर पर सर्वश्री नरेन्द्रजी बड़जात्या जयपुर, श्री शांतिलालजी आशीषजी जैन जयपुर, श्रीमती कुसुम-प्रदीपजी चौधरी किशनगढ, श्री प्रमोदजी जैन डी.डी.ग्रुप फिरोजाबाद, नमिता छाबड़ा मोतीसंस जयपुर, उषा छाबड़ा मोतीसंस, महेन्द्रजी गाला भोपाल, श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा आदि महानुभावों ने भी शिलान्यास स्थल पर ही ईंटे रखी व निर्माणकार्य के लिये अपना महत्वपूर्ण योगदान भी घोषित किया।

सिद्धभक्ति

17 छठवीं पूजन -डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

सातवाँ छन्द इसप्रकार है ह्व

(पद्धरि छन्द)

जय धर्म भर्म वन हन कुठार, परकाश पुंज चिद्रूपसार।
सुखकरण हरण दव सलिलधार, निज शक्ति प्रभाव उदय अपार।।७।।

हे सिद्ध भगवन् ! धर्म के संबंध में होनेवाले भ्रमरूपी जंगल को काटने के लिए आप कुठार (कुल्हाड़ी) हैं, प्रकाश के पुंज हैं, चैतन्यरूप सारभूत पदार्थ हैं। सुख को करनेवाले साधनों का हरण करनेरूप दावाग्नि के लिए आप पानी की मोटी धार हैं, भयंकर मेघवर्षा हैं। आपकी अपनी शक्ति और प्रभाव का अपार उदय है।

तात्पर्य यह है कि यदि धर्म संबंधी भ्रम भयंकर जंगल है तो उसे काटने के लिए आप शक्तिशाली कुठार हो, कुल्हाड़ी हो; यदि सुखकारी उपवन को जलाने के लिए दावाग्नि लगी हो तो आप पानी की मोटी धार हो, बौछार हो।

आठवाँ छन्द इसप्रकार है ह्व

(पद्धरि छन्द)

नभ सीम नहीं अरु होत होउ, नहीं काल अन्त, लहो अन्त सोउ।
पर तुम गुण रास अनंत भाग, अक्षय विधि राजत अवधि त्याग।।८।।

यद्यपि आकाश की सीमा नहीं होती है; तथापि यदि आकाश की सीमा होनी है तो हो जावे; इसीप्रकार काल का अन्त भी नहीं होता है, यदि काल का अन्त होना हो तो वह भी हो जावे; परन्तु वे आपके गुणों की राशि के अनन्तवें भाग की भी बराबरी नहीं कर सकते; क्योंकि आपके गुणों की राशि अक्षय अनन्त है, अक्षय अनन्तकाल तक शोभायमान रहनेवाली है।

तात्पर्य यह है कि आपके गुण अक्षय अनंत हैं; उनकी बराबरी कोई नहीं कर सकता। न तो आकाश के प्रदेशों की अनन्तता और न काल के समयों की अनन्तता ह्व कोई भी आपके अक्षय अनन्त गुणों के बराबर नहीं है। नौवाँ छन्द इसप्रकार है ह्व

(पद्धरि छन्द)

आनन्द जलधि धारा-प्रवाह, विज्ञानसुरी मुखद्रह अथाह।
निज शांति सुधारस परम खान, समभाव बीज उत्पत्ति थान।।९।।

हे भगवन् ! आप आनन्द के अथाह सागर हो। आपके मुखरूपी सरोवर से धाराप्रवाह जिनवाणीरूप विशाल सरिता प्रवाहित हुई है।

हे भगवन् ! आप अपनी शान्तिरूपी सुधारस अर्थात् अमृत की उत्कृष्ट खान हो और समताभावरूपी बीज की उत्पत्ति के आप उत्पत्ति स्थान हो। तात्पर्य यह है कि हे आनन्द के सागर भगवन् ! दिव्यध्वनि की उत्पत्ति भी आपसे ही हुई है और आप शान्ति की खान हैं तथा समभाव के उत्पत्ति स्थान हैं। **(क्रमशः)**

डॉ. उत्तमचंदजी भारिल्ल का देहावसान

जयपुर (राज.) : पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल एवं डॉ.हुकमचन्दजी भारिल्ल के छोटे भाई **डॉ. उत्तमचंदजी भारिल्ल** का दिनांक 9 मार्च 2014 को अत्यंत शांतपरिणामों पूर्वक देहावसान हो गया।

डॉ. उत्तमचंदजी भारिल्ल न केवल स्वयं गम्भीर आत्मार्थी थे, वरन् पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित तत्त्वप्रचार की गतिविधियों में भी प्रारम्भ से ही अत्यंत सहयोगी थे।

अनेक वर्षों तक अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के राजस्थान प्रदेशाध्यक्ष के रूप में राजस्थान में फैडरेशन की गतिविधियों के विस्तार और सफल संचालन में उनका उल्लेखनीय योगदान रहा।

आप सरकारी सेवा में रहते हुये लौंगिया-अजमेर में राजकीय आयुर्वेद नर्सिंग प्रशिक्षण केन्द्र के प्रिंसिपल रहे एवं लम्बे समय तक अजमेर जिले के राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सक संघ के निर्विरोध अध्यक्ष पद को सुशोभित करते रहे।

दिनांक 11 मार्च को आपको श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु श्री टोडरमल स्मारक भवन में एक शोक सभा का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल सहित श्री शान्तिकुमारजी पाटील, श्री विपिनजी शास्त्री, श्री ताराचंदजी सोगानी, श्री वीरेशजी जैन, श्री नरेन्द्रजी शर्मा (जिला चिकित्सा अधिकारी, अजमेर) आदि अनेक वक्ताओं ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल एवं श्री गुलाबचन्दजी जैन ललितपुर भी मंचासीन थे।

सभा की अध्यक्षता ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदीका ने और संचालन पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने किया।

अनुभव भारिल्ल परिवार की ओर से आपकी स्मृति में 1,11100/- की दान राशियों की घोषणा की गई -

- 31 हजार रुपये पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट (महाविद्यालय में एक छात्र के अध्ययन हेतु)
- 21 हजार रुपये पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट (ज्ञानप्रचार हेतु)
- 5100 रुपये श्री दि. जैन मन्दिर, बरौदा स्वामी (जन्मस्थान)
- 11 हजार रुपये श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय, बापूनगर
- 11 हजार रुपये श्री दि.जैन चैत्यालय, एवरशाइन नगर, मलाड, मुम्बई
- 11 हजार रुपये विभिन्न जैन पत्र-पत्रिकाएं
- इसके अतिरिक्त आपकी सुपुत्री श्रीमती अनुभूति जैन धर्मपत्नी श्री वीरेशजी जैन की ओर से भी 21 हजार रुपये की दान राशि घोषित की गई।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दुःखों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो - यही मंगल भावना है।

तत्त्वार्थमणि प्रदीप निःशुल्क मंगायें

डॉ. उत्तमचंदजी भारिल्ल की स्मृति में अनुभव भारिल्ल परिवार की ओर से भारतवर्ष के सभी जिनमंदिरों को डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा तत्त्वार्थसूत्र पर लिखित नवीनतम टीका 'तत्त्वार्थमणिप्रदीप' वितरित करने की घोषणा की गई है। कृपया पोस्टकार्ड लिखकर मंगा लेवें।

जैनसमाज को अल्पसंख्यक पर छिड़ी बहस

- अखिल बंसल, सम्पादक-समन्वय वाणी (पाक्षिक), महामंत्री-अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ

अन्ततोगत्वा भारत सरकार ने जैन समाज की बहुप्रतीक्षित मांग को पूरा कर ही दिया है। इस आन्दोलन को बल तब मिला जब गत वर्ष जुलाई में प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने जैन समाज के शिष्ट मंडल को उनकी इस जायज मांग पर आश्वस्त किया। गत माह राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने भी जैन शिष्टमंडल की मांग को अपना समर्थन दिया। इस दिशा में केन्द्रीय ग्रामीण विकास राज्य मंत्री श्री प्रदीप जैन आदित्य ने अथक् प्रयत्न कर राहुल गांधी को इस कार्य को करने हेतु प्रेरित किया जिसका यह प्रतिफल आज जैन समाज को देखने को मिल रहा है।

जैनियों को अल्पसंख्यक कोटि में रखे जाने से लाभ -

1. जैन शिक्षण संस्थाएं अपना जैन धर्म शिक्षा मूलक पृथक् अस्तित्व बनाए रख सकेंगी। उन पर पूरी तरह जैनों का प्रबंध एवं नियंत्रण होगा। 2. जैन समाज द्वारा स्थापित एवं संचालित शिक्षण संस्थाओं में पढ़ाई करने/कराने के लिए जैन धर्मावलम्बियों को स्वतंत्र अधिकार प्राप्त होगा। अर्थात् जैनियों द्वारा स्थापित शिक्षा संस्थाओं में हम जैन धर्म की पढ़ाई करने कराने के लिए स्वतंत्र हैं। 3. जैन धर्मावलम्बियों द्वारा स्थापित एवं संचालित शिक्षण संस्थाओं में जैन विद्यार्थियों के लिए 50 प्रतिशत सीटें आरक्षित की जा सकेंगी। 4. अल्पसंख्यकों की धार्मिक संस्थाओं, मंदिरों, तीर्थों व ट्रस्टों का सरकारीकरण, अधिग्रहण आदि नहीं किया जा सकेगा। जैनियों को अपनी संस्कृति व धर्मायतनों की रक्षा का अधिकार प्राप्त होगा। 5. जैन धर्मावलम्बी अपनी प्राचीन संस्कृति, पुरातत्व, स्थापत्य कला का संरक्षण कर सकेंगे 6. जैन धर्मावलम्बियों को बहु संख्यक समुदाय के द्वारा प्रताड़ित किए जाने की स्थिति में सरकार जैनत्व की रक्षा करेगी। 7. अल्पसंख्यकों द्वारा संचालित ट्रस्टों को भाड़ा नियंत्रण अधिनियम (रेन्ट कन्ट्रोल एक्ट) से भी मुक्ति प्राप्त है, जिससे मंदिर व ट्रस्ट के मकान, दुकान आदि को आसानी से खाली कराया जा सकेगा। 8. जैन समाज द्वारा स्थापित एवं संचालित शिक्षण संस्थाओं में जैन विद्यार्थियों को प्राथमिकता के साथ प्रवेश दिया जाएगा। 9. उक्त संस्थाओं में अध्यापकों, आचार्यों एवं कर्मचारियों के रूप में जैनों को नियुक्ति में प्राथमिकता दी जा सकेगी। 10. जैन समाज द्वारा स्थापित एवं नियंत्रित शिक्षण संस्थाओं में अन्य धर्मावलम्बियों के होने पर भी प्रार्थना जैनधर्म संबंधी जैसे णमोकार मंत्र, तीर्थंकर स्तुति आदि की जा सकेगी। 11. व्यवसायिक पाठ्यक्रमों यथा इंजीनियरिंग, मेडिकल, व्यवसायिक प्रबंधन कम्प्यूटर साइन्स आदि से संबंधित संस्थानों की स्थापना अगर जैन समाज करती है तो उसके प्रवेश एवं प्रबंध संबंधी सभी अधिकार जैन समाज के पास होंगे जिसका लाभ अन्य वर्गों को तो मिलेगा ही किन्तु जैनों को प्राथमिकता के आधार पर मिलेगा। 12. अल्पसंख्यक वित्त आयोग से बहुत कम ब्याज दर पर ऋण, व्यवसाय व उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा के लिए उपलब्ध हो सकेगा। 13. विश्वविद्यालयों द्वारा चलाए जा रहे कोचिंग केम्पस में विद्यार्थियों को शुल्क से मुक्ति मिल सकेगी। 14. आई.ए.एस., आई.ए.एफ., आई.पी.एस., पी.एम.टी., आई.आई.टी. आदि की तैयारी के लिए कोचिंग क्लासेज चलाने, गर्ल्स हायर सैकेण्डरी स्कूल तथा छात्रावास भवन के निर्माण आदि के लिए केन्द्र सरकार 50 लाख रुपए का अनुदान देती है।

विरोध के स्वर -

29 जनवरी के दैनिक पंजाब केसरी में प्रकाशित पांचजन्य के सम्पादक तरुण विजयजी के आलेख **'क्या भारत अपनी नियति की ओर बढ़ रहा है?'** में जैन समाज के अल्पसंख्यक मुद्दे पर भी टिप्पणी की गई है। वे लिखते हैं - **'किसी ने जैन समाज के नेताओं से यह नहीं पूछा कि हिन्दू समाज का अंग होते हुए आपको आगे बढ़ने का कौन सा अवसर नहीं मिला तथा तिरस्कार की वे कौन सी घटनाएं हुई कि उन्हें लगा हिन्दू रहने में कोई लाभ नहीं।'** इनके अतिरिक्त भी प्रयाग शुक्ल, प्रो. दयानन्द भार्गव तथा गोविन्द चतुर्वेदी जैसे प्रतिष्ठित लेखकों के आलेख कतिपय पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ने को मिले हैं।

एक पत्रकार होने के नाते मैं तरुण विजयजी की बहुत इज्जत करता हूं, परन्तु उनके बौद्धिक ज्ञान पर मुझे तरस आता है। जैनधर्म हिन्दूधर्म का अंग कब से हो गया समझ से परे है। सर्वप्रथम में यहां यह बताना अभीष्ट समझता हूँ कि हिन्दू कोई धर्म नहीं रहा। इतिहास का अवलोकन किया जाए तो भारतवर्ष में दो ही संस्कृतियां रहीं एक वैदिक संस्कृति और दूसरी श्रमण संस्कृति। वैदिक संस्कृति में ब्राह्मण, वैष्णव व शैवधर्म तथा श्रमण संस्कृति में जैनधर्म व बौद्धधर्म विद्यमान थे। मेरा स्पष्ट मानना है कि हिन्दू धर्म न होकर एक संस्कृति है जिसमें सभी धर्मों के लोग समाहित हैं। भारत में षट्दर्शन इतिहासकारों व पुरातत्वविदों ने स्वीकार किए हैं -

'जैना मीमांसका बौद्धाः शैवा वैशेषिका अपि
नैयाविकाश्च मुख्यानि दर्शनानीह सन्ति षट।।

- (शारदीयाख्य नाममाला, 147)

अर्थ : जैन, मीमांसक, बौद्ध, शैव, वैशेषिक, नैयायिक - ये छह प्रमुख दर्शन इस देश में हैं। वायुपुराण में जैनधर्म को स्वतंत्र दर्शन माना गया है तथा उसकी अलग उपासना विधि मानी गई है -

उपासनाविधिश्चोक्तःकर्मसंशुद्धिचेतसाम्।
ब्राह्मं शैवं वैष्णवंच सौरं शाक्तं तथार्हतम्।।
षड्दर्शनानि चोक्तानि स्वभावनियतानि च।
एतदन्यच्च विविधं पुराणेषु निरूपितम्।।

- (वायुपुराण 104/16-17)

ईसापूर्व विदेशी यात्री मेगस्थनीज ने भी भारत में दो ही मूल संस्कृतियों के दर्शन किए वे थी - **श्रमण संस्कृति व ब्राह्मण संस्कृति** विश्वविख्यात लेखक डॉ. स्वानवक **'टा इण्डिया'** में लिखते हैं - **'इन भारतीयों के दो सम्प्रदाय हैं एक 'सरमनाई (SARMANAI) कहलाता है और दूसरा 'ब्राचमनाई' (BRACHMANAI) इनमें 'सरमनाई' श्रमण (जैन) तथा 'ब्राचमनाई' ब्राह्मण कहलाते हैं।'** ईश्वर के विषय में जैनों की मान्यता बिल्कुल भिन्न मौलिक एवं स्वतंत्र है। जैनधर्म में ईश्वर को वीतरागी, सर्वज्ञ और हितोपदेशी माना गया है अर्थात् वह ईश्वर को सृष्टि का कर्ता नहीं मानते जबकि अन्य दर्शनों में ईश्वर को जगत का कर्ता एवं नियन्ता माना गया है। इसप्रकार विपरीत मान्यता वाले धर्म कभी एक नहीं हो सकते ऐसी मेरी मान्यता है। वैदिक दर्शनों का मूल आधार वेद ही हैं। उन्होंने वेद को ही मूल प्रमाण माना है और जैनों को वेदबाह्य कहा है -

अपरे वेदवाह्य दिगम्बरा एकस्मिन्नेव पदार्थे भावा भावौ मन्यते।

- (ब्रह्मसूत्र, विज्ञानामृत भाष्य 2/2/33)

जैनधर्म चौबीस तीर्थंकरों को पूज्य मानता है। नाभिराय के पुत्र ऋषभदेव थे जिनके पुत्र भरत के नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष विख्यात हुआ। इस तथ्य को वैदिक संस्कृति के 'शिवपुराण' में स्पष्ट रूप से निम्नप्रकार स्वीकार किया गया है -

नाभेः पुत्रश्च वृषभो वृषभाद् भरतोऽभवत्।
तस्य नाम्ना त्विदं वर्षं भारतं चेति कीर्त्यते।। - (शिवपुराण, 37/57)

उपरोक्त तथ्य की पुष्टि महाकवि सूरदासजी वंश परम्परा का परिचय देते हुए लिखते हैं -

बहुरि रिषभ बड़े जब भये। नाभिराज दे वन को गये।
रिषभ राज परजा सुख पायो। जस ताको सब जग में छायो।।
रिषभ देव जब वन को गये। नव सुत नवौं-खण्ड नृप भये।
भरत सो भारत खण्ड को राव। करे सदा ही धर्म अरु न्याव।।

- (सूरसागर, पंचमस्कंध, पृष्ठ 150-151)

यहां यह भी स्मरणीय है कि जैनों का मूल मंत्र '**णमोकार मंत्र**' है। जैनों के स्वतंत्र तीर्थ, स्वतंत्र पर्व यहां तक कि स्वतंत्र संवत् है जिसका उल्लेख प्राचीनतम शिलालेख जो कि राजस्थान प्रांत में अजमेर जिले के बड़ली गांव से प्राप्त हुआ है में अंकित है। इस शिलालेख में महावीर निर्वाण संवत् 84 का उल्लेख है। इससे सिद्ध होता है कि ईसापूर्व 443 के लगभग जैनों का स्वतंत्र वीर निर्वाण संवत् प्रचलित हो चुका था। जैन संवत् की स्वतंत्रता एवं प्राचीनता के साथ-साथ जैनों में वर्षमान तथा तिथिमान का भी स्वतंत्र सिद्धान्त है। वैदिकों में जहां '**विंशति घटिका**' सिद्धान्त है वहीं जैनधर्म में '**रस घटिका**' सिद्धान्त माना जाता है। इसी सिद्धान्त के अनुसार सभी मतों की अपेक्षा छह घटी प्रमाण (दो घंटे चौबीस मिनिट) तिथि का मानग्राह्य है।

तिरस्कार की घटनाएं -

अब मैं आपके एक और महत्वपूर्ण कथ्य पर प्रकाश डालना चाहूंगा जिसमें आपने तिरस्कार की घटनाओं के संबंध में प्रश्न उठाया है तो माननीय तरुण विजयजी इतिहास उठाकर देखें तो आपको पता चल जाएगा कि बहुसंख्यक हिन्दुओं ने कितने अत्याचार किए हैं इस अल्पसंख्यक जैन समाज पर ? शंकराचार्यजी के समय की वीभत्स घटनाएं इतिहास उठाकर आप स्वयं देख लें। '**भारत में अंग्रेजी राज**' पुस्तक के अनेक पृष्ठ भरे पड़े हैं जो जैनों पर हुए अत्याचार की करुण कहानी कह रहे हैं। कुछ उदाहरण हैं - शैव प्रचारक तिरुज्ञान की सलाह पर अनेक जैनों (लगभग 8000) को फांसी पर लटका दिया गया। इन अत्याचारों के दृश्य अभी भी मीनाक्षी मंदिर के मंडप में देखे जा सकते हैं।

जैनधर्म के लोग हर तरह प्रताड़ित हुए थे। उन लोगों के साथ धार्मिक विद्वेष के कारण भयंकर हत्याकाण्ड हुआ था। जैन लोगों को सूली पर चढ़ाया गया, धन-धान्य, घर-बार सब कुछ छीनकर उन पर अत्याचार किए गए '**अन्य वण्ण आरुरिल्ल ... पन्नु पालुप्प्यल्लिकत्नु परित्त क्कुलंसूल करै पडत्तु**' (शैव पेरयिपुराणं)। अर्थात् श्रमणों के घर, धर्मशाला, पाठशाला आदि छीनकर बड़ा तालाब बनाया गया था। '**तैलये आगे अरुप्पदे करूमं कण्डाय**' (शैव-आलवार तिरुप्पाडलग्रंथ) अर्थात् जैनियों के सिर काटो यही तुम्हारा काम है।

कानजीपुर के पास 'तिरूवोत्तूर' में इस तरह का कलहकारी कार्य हुआ था। वहां के शैव मंदिर में उत्कीर्ण यह दृश्य देखने हेतु अब भी मौजूद है।

इस विषय की गंभीरता को देखते हुए मैं इसकी गहराई में नहीं जा रहा हूं अन्यथा तमिलनाडु का जैन इतिहास इसप्रकार की घटनाओं से भरा पड़ा है। यही नहीं वहां के सैकड़ों जैनमंदिर शैव या वैष्णव मंदिर के रूप में बदल दिए गए। तिरुपति बालाजी, कोल्हापुर का महालक्ष्मी मंदिर, बद्री-केदार मंदिर, जगन्नाथपुरी मंदिर तथा आमेर के अनेक मंदिर इसके जीते जागते उदाहरण हैं जिनमें आज भी यत्र-तत्र जैन मंदिर के अवशेष दिखाई दे जाते हैं। जैनधर्म के बहुश्रुत विद्वान पं. टोडरमलजी के साथ जयपुर में जो कुछ हुआ वह हृदय को झकझोरने वाली घटना है इसका वर्णन पं. बखतराम साह कृत बुद्धिविलास में देखा जा सकता है -

तब ब्राह्मणनु मतो यह कियो, शिव उठान को टौना दियो।
तामैं सबै श्रावगी कैद, करिके दंड किए नृप कैद।।
गुरु तेरह पंथिनु को भ्रमी, टोडरमल्ल नाम साहिमी।
ताहि भूप मारयौ पल मांहि गाड्यो मद्धि गंदगी ताहि।।

उपरोक्तानुसार जयपुर में जैनधर्म का पुनः विशेष उद्योत होने लगा तब यह कार्य सम्प्रदाय विद्वेषी ब्राह्मणों को सहन नहीं हुआ और उन्होंने मिलकर शिव पिण्डी उखड़वाने का गुप्त षडयंत्र रचा और उसका अपराध जैनियों पर मड़ दिया। राजा ने घटना सुनते ही बिना किसी जांच पड़ताल के क्रोधवश सब जैनियों को रात्रि में ही कैद कर उनके प्रसिद्ध विद्वान पं. टोडरमलजी को पकड़वाकर हाथी के पग तले मरवा दिया और उनके शव को शहर की गंदगी में गड़वा दिया। इससे घृणित कार्य और क्या हो सकता था ?

जैनधर्म में **देव शास्त्र गुरु** ही आस्था के प्रमुख केन्द्र बिन्दु हैं। इनका अपमान किसी भी जैनी के लिए किसी कीमत पर स्वीकार नहीं। आज जैनियों का प्रमुख सिद्धक्षेत्र जहां से 22वें तीर्थंकर भ. नेमीनाथ मोक्ष पधारे वहां हिन्दुओं ने मोदीजी के आशीर्वाद से बलात कब्जा कर रखा है और वहां जाने वाले जैन मतावलम्बियों के साथ मारपीट करना आए दिन की घटना में शुमार है। मुनिश्री प्रबलसागरजी पर असामाजिक तत्वों द्वारा प्राणघातक हमला द्वारा उन्हें सरेआम चाकू घोंपकर दिल दहलाने वाली घटना को अंजाम दिया गया। भाजपा का शीर्ष नेतृत्व कान में रुई डाले बैठा रहा और कभी इस घटना पर निन्दा के दो शब्द उनके द्वारा नहीं कहे गए। राजस्थान में पिछले कार्यकाल में एक वरिष्ठ नेता की शह पर ऋषभदेव केसरियाजी क्षेत्र पर न सिर्फ बलात कब्जा किया गया अपितु कोर्ट केस हारने के उपरान्त भी वहां के जैन समाज का कत्लेआम हुआ जिसे राजस्थान की तत्कालीन सरकार हवा देती रही और सुनिए उड़ीसा स्थित खारबेल की गुफाओं में बाबाओं ने जबरन कब्जा कर रखा है। वहां भी न्यायालय द्वारा केस हार चुके हिन्दु बाबा आज भी कब्जा सौंपने तैयार नहीं हैं।

गिरनारजी, केसरियाजी और उड़ीसा के मंदिरों से यदि हिन्दुओं द्वारा जबरन किया गया कब्जा नहीं हटाया तो हो सकता है उन लोगों के लिए दिल्ली दूर की कोडी सिद्ध हो सकती है जो प्रधानमंत्री की रेस में दौड़ रहे हैं। क्योंकि भले ही जैन समाज किसी का जिताने की ताकत न रखती हो पर हराने की ताकत अवश्य रखती है। मेरे जैसे जैन समाज के अनेक लोगों की इच्छा है कि **गिरनारजी तीर्थ मुक्ति का तोहफा भी जैन समाज को प्राप्त हो।** इसके लिए उन तमाम वर्ग विशेष को दंभ के दायरे से बाहर निकलकर सत्य के धरातल पर आना होगा जो अब तक जैन समाज को अल्पसंख्यक का दर्जा मिलने से नाराज हैं अन्यथा **फिर पछताए होत का, जब चिड़िया चुग गई खेत।**

129, जादोन नगर 'बी', स्टेशन रोड़, दुर्गापुरा, जयपुर - 302018
मो. : 09929655786, **E-mail : samanvayvani@gmail.com**

17 मार्च 2014, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

स्नातक ज्ञानगोष्ठी में बही तत्त्वज्ञान की गंगा-

दिनांक 28 फरवरी की रात्रि में टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा स्नातक ज्ञानगोष्ठी का आयोजन किया गया। मंगलाचरण श्री अकलंकजी जैन फिरोजाबाद ने एवं मंच उद्घाटन श्री महेन्द्रजी गाला भोपाल ने किया।

रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम के अन्तर्गत **'वर्तमान समय में जैनधर्म पढने की आवश्यकता'** विषय पर ज्ञानगोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी में महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों ने अपना संवाद प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन व अकलंक जैन फिरोजाबाद ने किया। सभा का उद्घाटन श्री महेन्द्रजी गाला ने किया।

अब जर्मनी से भी ...

2 मार्च 2014 एन्वर्ष (बेल्जियम) निवासी श्री भरतभाई गुणवन्तभाई शाह की प्रेरणा से जयपुर के रत्नव्यवसायी श्री सुनीलजी जैन के साथ जर्मनी के चार प्रबुद्ध नागरिकों के एक दल का आगमन ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में हुआ।

उक्त दल का उद्देश्य जैनदर्शन की प्राथमिक जानकारी प्राप्त करना और मूलभूत सिद्धांतों को समझना था।

श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्रीमती स्वानुभूति जैन एवं श्री अनेकान्तजी भारिल्ल ने तार्किक और सुरुचिपूर्ण शैली में उक्त दल को जैनदर्शन के इतिहास, संस्कृति और मूलभूत सिद्धांतों यथा - अकर्तावाद, वस्तुस्वातंत्र्य, अनेकान्त एवं स्याद्वाद, क्रमबद्धपर्याय आदि की संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत की एवं उनके प्रश्नों का उत्तर भी दिया।

उक्त दल ने पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की गतिविधियों का निरीक्षण भी किया और अत्यंत प्रसन्नता व्यक्त की।

डॉ. पारसमल अग्रवाल सम्मानित

जैन लॉरियट पुरस्कार प्राप्त

दिल्ली : दिनांक 8 फरवरी को आयोजित एक सम्मान समारोह में ज्ञानसागर साइंस फाउन्डेशन की ओर से स्थापित इस पुरस्कार के अन्तर्गत डॉ. अग्रवाल को प्रशस्ति-पत्र एवं 2 लाख रुपये की नकद राशि प्रदान कर सम्मानित किया गया।

वैराग्य समाचार

उज्जैन (म.प्र.) निवासी श्री रतनलालजी कासलीवाल का दिनांक 18 फरवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप स्व. पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा के समधी थे।

आपकी स्मृति में आपकी धर्मपत्नी श्रीमती माणकबाई द्वारा जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 500-500/- रुपये प्राप्त हुये।

जैनपथप्रदर्शक के स्वामित्व का विवरण

फार्म नं. 4 नियम नं. 8

समाचार पत्र का नाम	:	जैन पथप्रदर्शक (हिन्दी)
प्रकाशन स्थान	:	श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.)
प्रकाशन अवधि	:	पाक्षिक
मुद्रक	:	श्री प्रमोदकुमार जैन (भारतीय) जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम.आई.रोड, जयपुर (राज.)
प्रकाशक का नाम	:	ब्र. यशपाल जैन (भारतीय) पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 (राज.)
सम्पादक का नाम	:	श्री रतनचन्द भारिल्ल (भारतीय) श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 (राज.)
स्वामित्व	:	पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 (राज.)

मैं ब्र. यशपाल जैन एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकृत जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

प्रकाशक :

दिनांक : 17-3-2014

ब्र. यशपाल जैन

ट्रस्टी, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें- वेबसाईट - www.vitragvani.com

संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 13 मार्च 2014

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.

सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -

ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

फोन : (0141) 2705581, 2707458

E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127